

गन्धर्वनिवाहा॥

॥ असांगखज्वरवदवदवनिधाधमलभ

लवकवजसमवजंगमवजधनरुंरुंरुंरुंसाधविदजविद्यसवनायप्राप्तभूत(ध)

धर्मयुक्तदिक्षिविद्युष्टस्वाहा॥

॥ नमस्तु पूर्वप्राचीननम

स्तु पूर्वप्राक्रम॥ प्राऊलिकानमस्यामाधर्मवाजनमाशुन॥

॥

रवजखज्वरगर्हविदद(ध)वदुवाजनवद्ववपलपानावहीमपर्वकखवा(य)

पत्र
१४

कूटिका (यत्र का द्विवर्गवर्ति सा च गवर्ति मार्गवर्ति गर्गवर्ति चिउवर्ति चिउकांति
स्वस्त्युममसर्वसत्त्वाना (अहंरुचस्यांदि क्षिप्वाहा ॥ ॥ धवधि
धवधिषध्वं निरुंजनि प्ररुंजनि विधमधि किं पूष सकलसाव (थसाववर्ति धूवध
वधूवधवधिषुद्रवव (धयाववर्ति स्वा (गधनि स्वस्त्युममसेपविवावस्य सर्वसत्त्वा
नाक सर्वपिडवापसर्गस्य ४ पूर्वस्यांदि क्षिप्वाहा ॥ ॥ धनिध

वहः
१४

ववर्तिकांति काववर्तिकिं किं सि किं वनि किं वधि किं वदिधवधी वधि रूमिधवधि वि
रूमिधवधी हिमवर्ति रनिध्वगधिमावागी स्वस्त्युममसर्वसत्त्वानाक दक्षिणस्यां
दि क्षिप्वाहा ॥ ॥ धर्मिववा (गवववर्ति ववनि दिध (गविवाधि
धगववर्तिकपिलवध्वलि विवधि विवाजविधावधि विमनि वध्वनि न्यलस्वस्त्यु
मुममसर्वसत्त्वानाक पश्चिमायांदि क्षिप्वाहा ॥ ॥ वध्ववध्व

पञ्च
१७

कर्षेतिविसंगवनिष्ठुद्धसाधनिवन्धवनिवासवविरूषतिविसंगमयधुपनिपूष्य
गर्हस्वस्त्युममसर्वसत्त्वानाकसर्वरूपापडवापायासत्यः स्वाहा॥

॥ कलिं गहाजदशद (यज्यन्ति सिंहमदसावाग्राधहं सगमिनिमालिनि
रुलमिरुलरुलिम ॥ हं हं हं हं हं हं ॥ महसूदनिवनाग्रवतिरुक्लिनेचवतिचञ्चु
लिवलसेन्यवनावयस्वाहा ॥

वह
१७

॥ खटविरखटखटविरलविलं

ववलवतिचदयन (धर्ममृगनिर्घाषस्वाहा ॥

॥ रुमश्कव

वतिकखलिकनलिखनलशद (गङ्गकिनिश्वनेज्वलगल (गहविधिभावनि
र्भातिप्रभातिस्वाहा ॥

॥ हविकशिनकिशयहिनेज्वमवर्जु

लयलकठककवकयूवहस २ जससखनंसमचूगहनस्वाहा ॥ मूक २ स मूक
स्वाहा ॥ हिलस्वाहा ॥ मिलस्वाहा ॥

॥ वृद्धननिर्जितामावाधम

पक्ष

११

[illegible]

यद्वा

११

स्वाहा॥ जंरुनि स्वाहा॥ परंजनि स्वाहा॥ वलपरंजनि स्वाहा॥ जय स्वाहा॥ विजय
स्वाहा॥ जयविजय स्वाहा॥ ॥ अंगवंगरंगारवन नूनदि
मूत्रिगिनिगवरिंगनृक्षिसृक्षिगिनिगवनलायनभाष(ध्यावननसने
अवरुअन(ध)अलहप्रकर्षक्षि स्वाहा॥ ॥ वाधिश्महावाधि
धाधानूमकरुलिनिहललेवरुलवरुलभिद्वानिदासायवकसागवेइवासदइ

पक्ष
१८

वागमभूलभूलप्राप्तभूलवक्ररुगरुगरुगिनिनिवाविधिस्वाहा॥

॥ अक्रमविक्रमधाधरुगधाधरुगंगमदहिनिधधवशधधवदधि-
निनिमुखखखमखखखखसावंगमचन्द्रचपलहसिहलहाविधीस्वाहा॥

॥ वक्रधेविपुलधनभाक्कसिंहनकायिना॥ सविधंगिविगुधनरा
जनमूपनामिकं॥ संपुगुक्ररुग॥ अनानिर्विधीकुरुशजिकं॥ जनसम्पदाक्क

वक्रः
१८

नअमृकंरुगुरुजनं॥

॥ खखमखखखखखखमभिभ
क्षिप्तसिहमरुभिभिभिभ॥ स्वस्तिस्वस्तिस्वस्तिस्वस्ति॥ ४॥ भानि२४वागीममस
र्वसत्त्वानाथययमिषधसंसृष्टयहमंनिवामयं॥ यनदग्धयथसूक्तंसम्यक्
र्वकुगादृष्टी॥

॥ कलककललकलमवलनिकवृक्षलथकलल
लखलूमभ्रमिसंकामधिसाहा॥

॥ ॐ दमवाचरुगवान्साचसर्वावनीप

पक्ष
२०

कवि कवि कलनि ॥ कल २ नि ॥ इमस्तिनि ॥ सूकसूभ ॥ गताया ॥ विलायापविबला
यावर्षकुदवसमंनन ॥ निकिहिस्वाहा ॥ ॥ नभावूदायनमाधर्माय
नमः सैधाय ॥ नमामहाभायूथविद्यावारु ॥ ह्रह्रह्रह्रह्र ॥ ह्रलू ३ ॥ नागललल ॥ इम्वल
लल ॥ ह्रय २ विज २ थस २ रुनू २ ॥ ह्रवजिन ॥ जिनी अगुल २ लामला ॥ लिमला किलिमल
॥ लिमिलिमला ॥ ॥ लिमिरु किलिमिरु ॥ लिमिलिमिरु इम्व इम्व ॥ मासू २ गलाव

पक्षः
२०

लावलावपलाविमला ॥ छिविहिदिविविहिवितभावूदानां विलिकिसिगदाहिकानां न
मार्हकानां हावदाववर्षकुदवसमंननदहासूदिहासूनभावूदानां स्वाहा ॥ ॥
सिद्धसूसिद्धभाचनिभाकनिमूकविमूर्कअमलविमलनिर्मलअक्षुलपक्षुलमंग
लमंगलगर्हिहिन ॥ धहिगर्धगर्हमलबलगर्हह्रदसूह्रदसमनह्रदधूरुह्रदसर्वार्थ
साधनिपत्रमार्थसाधनिसर्वानर्थप्रवाधनी सर्वमंगलसाधनिय ॥ आवहिमनसिमान

५५
२२

वस्यश्चनस्तवक ॥ एनमस्तवक ॥ नर्कलनर्कलिसनर्कलिकनिर्मलिकनमखलि
मथाध ॥ खलमलिखयमयखिल ॥ ॐ निसर्कलपुम्बुपुम्बुभूनदनदपधद ॥
१२ नद ॥ अथमाल ॥ अथमाहिलवर्षलुदवानवाटकनसस्तकग्यसमनननाया
धियायायनिहविनामिकंमात्रिकृष्टि ॥ ॐ लिमिलिकिलिमिष्टि किलिलिलि
मिलि ॥ ॐ लिमसिर्वापुडाभिदामनुपदा ॥ स्वाहा ॥ ॥ सूनादवर्षलुद

वक्षः
२२

धर्मरत्न वज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार DH436

गाम्भूषं वाममदाघनविद्यमं गुरुमंगलं हवन्तु सर्वदा कावगुरु ॥ ॐ नमो ॥ गन २ पात्रं गन पात्र संगन बोध्य स्वाहा ॥ प्रह्ला पात्र मिताया नु

धर्मरत्न बज्राचार्य गुरुत श्री महाविहार 436

